बिदेस से व्यौपार खातिर उस टैन नरेटी में आउर नाक में आउर कान में सोना लटका के तुम लोग देस दरोह करेगा ? जानता है देस में सकड़े अस्सी परसंट सोना गहना के रूप में बेकार पड़ा हुआ है। हर साल इस मुलुक में तीन सै करोड़ का गहना कीना जाता है।

भगजोगनी : तीन सै करोड़ ?

खदेरन की माँ : आ मार बड़नीं रे, बुझाता तीन सै करोड़ केतना होला ?

भगजोगनी : एक दउरी से कम नहीं होई।

लोहासिंह : जब सब सोना के गहने बनी त बाहर से व्यौपार कइसे होखी ? दस में नौ इमदी अलचारी सादी बियाह में देखावा खातिर सुसैटिक में ऊँचा बनने के खातिर गहना दबाब में पर के कीनता है, देस के तरक्की खातिर घर से सोना बाहर निकालना जरूरी है, सोना के गहना के रेवाज कम करना जरूरी है ! एही से गौरमिन्ट सोना कंटरोल किया आउर १० जनवरी १९६३ से कनून किया कि केहू १४ करंट से अधिका सोना के गहना नहीं बनवायेगा।

पाठक : १४ करंट ठीक से बूझल लोग जेबा से। पहिले १८ से २२ करंट के सोना के गहना बनता था जिसमें २ से ३ तीन हिस्सा तामा का कनकसन था, १४ करंट में ६ से ८ हिस्सा तामा रहेगी। देस में ४१ सौ करोड़ रोपया का सोना है बाकि बहुत आप-

सोस के बात है कि अबही तक एके लाख रोपेया का बंड बिकाया है।

बुलाकी : बाल रे बाल, ई बैमानी।

लोहासिह : बहुत सोना के ईंटा तहखाना में दबा हुआ है, उसको बाहर निकालना है।

सोना : पानी पानी।

बुलाकी : ना चुप रहब। ढेर पनिअइलऽत उठाके पटकिये देब।

लोहासिंह : देस का एडभंटिज खातिर अपाना सवारथ छोड़ना है। जवना इमदी का सवारथ देस के सवारथ से डिफरेंट है ऊ देसदरोही है। जे गहना देस के तरंकी में सबसे डबल रुकावट है, जे सोना के गहना सैंकड़न घर बरबाद किया, मेहरारू के जिनगी तबाह किया, जिसको घर में रखने से चोरी का खतरा हरमेसा बनल रहता है उस सोना के गहना तुम अबो बनावेगा? बोलो?

बुलाकी : पाहुन, हम बिगुल बजा के गांव के लोग के बोलावत बानी। सोना के बारे में गांव के लोग के बतावल जरूरी बा।

लोहासिंह : जरूर, फौरन बिगुल बजाओ, हम सोना का बोखार जब ले नहीं छोड़ा लेगा तब ले सोना हराम है।

(बुलाकी बिगुल बजाता है)

खदेरन की माँ : ई बतिया रउआ पहिलहीं कहती त हम काहे झगड़ा करतीं। गहने पेन्हे के सवख होखी त इमदी चानी के पेन्हीं। जब सोना के देस के जरूरत

बा त इमदी घर में काहे के रखी । आ मार बढ़नी रे ।

सोना : त जात बानी हमहूँ सोना के ईंटा के बएड कीने बाकि खदेरन बाबू के माताराम, तनी हमरा तीनो घरवाली के समुझाइब, ना त हमरा कपार के एको बार ना बांची ।

पाठक : चल पहिले मीटिन में पूरा बात बूझ लऽ । लोग आगइल होई । चल जजमान ।

लोहासिंह : सोना के घर से निकाल के देस के तरंकी खातिर निछावर करनेवाली बटैलियन, रेडी अटेनशन, फारवार्ड मार्च । लेफ्ट राइट लेफ्ट राइट लेफ्ट ।

(पर्दा गिरता है ।)

जुआ का विरोध

(बुलाकी और सिताबी खदेरनकी माँ और भगजोगनी से दीवाली के अवसर पर जुआ खेलने के लिये रुपये माँग रहे हैं।

दृश्य : लोहासिंह के बरामदे का है।

(समय—दोपहर)।

खदेरन की माँ : भगजोगनी सुनत बाड़िस। आ मार बढ़िनी रे।

बुलाकी : बहिनियाँ अबेर नत कर। उहाँ भुतहिया पुल के नीचे चंडाल चउकड़ी जमल बा। कउड़ी के ताल पर लछमी बरिस रहल बाड़ी। कुबेर लेखा खोल द आपन भंडार। बना ल आपन सगुन साल भर खातिर। जतने चीनी डलबू ओतने मीठी होई।

सिताबी : भगजोगन दोबिधा में नत पड़। खिसा बा जे

दोविधा में दूनो गए, माया मिलल न राम। हम आ बाबू बुलाकी सिंध ऊ जुआड़ी ना हईं कि अठन्नी चवन्नी जीत के चल आईं। चादा फेंकत जात बानी जा। गरई पौठिया धर के का होई? जब फंसाइब त बौआरी भा रोहू।

बुलाकी : सिताबी भइयवा। ई लोग के बिसवास नइखे होत। देखत नइख बहिनियाँ कइसन माहुर लेखा मुंह बनवले बाड़ी?

सिताबी : आ भागोजोगन हमरा के अइसे ताकत बाड़ी जइसे हम आदमी नाहीं, बिछकुतिया होखीं।

बुलाकी : चल मरदे। जेकरा खातिर चोरी कर, उहे कहे चोर।

सिताबी : जुआ का हमनी के फैदा खातिर खेलत बानो, जीतल जाई त इहे लोग के न फैदा होई।

बुलाकी : छान्ही पर चढ़ा के सीढ़ी घींचल भले आदमी के काम ना ह। ना मदत करे के हियाव रहे त पहिलहीं कहेला। हमनी के दोसर महाजन खोजतीं जा।

सिताबी : हमनी से जुआ खेलावे खातिर बड़का-बड़का राजा महराजा दाँत निपोरले थइली खोल के खड़ा रहन। बाकि हमनी के सोचलीं जा कि रौपया आवे के बात घरे में आओ।

बुलाकी : ओह दाता से सूम भला जे पहिले देवे जवाब। जब अमदनी के बेरा आइल त छव-पाँच में परल बा लोग। मान जा बहिनियां आवत लछमी के अनादर करके पछतइबू।

सिताबी : अबहीं ना देब सभे त जेतना देले बानी सभे उहो हाथ से निकल जाई।

खदेरन की माँ : रोपेया त ओरा गइल, अब ले जा हई चानी के हँसुली। बाकि ना जीत के अइब त हम कहूँ के ना रहब, धोबी के कुकुर न घर के न घाट के वाला हाल हो जाई। (हँसुली देती है) ल।

भगजोगनी : हमरो, सिताबी हई चानी के पहुँची ले जा। जतना मंगल देत गइलीं, अब धोखा नत दिह। (पहुंची खोलकर देती है) पहुँची ल सिताबी।

बुलाकी : बाह बहिनियां। चलत बानी जा। बाकि पाहुन से नत कहिह जा।

सिताबी : ना त ऊ सब खरमंडिल करके छोड़ दिहें। चल ह।

बुलाकी : चल भगवती के नांव लेके फेंकब कउड़ी, एको पट ना होई।

(बुलाकी और सिताबी जाते हैं)

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, ई लोग के जुआ ह कि सरबसोख ह। पांच दिन से बुलाकी आ सिताबी रोंपेया मांग मांग के ले जात बा लोग। कहल लोग कि जतना देबू ओकर चरोबरी रोपेया जीत के लवटाइब। कुछ असदनी कहाँ से कराई लोग मांगते जाता। आज गहनो के लम्मर लागल। देखीं, आवेला आम कि जाला लबेदा के जाने करम के का लिखल बा?

भगजोगनी : अइसे नत बोलीं मलकाइन। सुन के बुझाता कि लहकता तावा पर एक चुरुआ पानी पर गइल,

करेजा छांय से बोलता। रोपेया वापस ना लवटी त हम त जहर खा के सूत जाइब।

खदेरन की माँ : सात बीस रोपेया ले गइलन बुलाकी भइया। सात बीस के चरोबरी कतना भइल ?

भगजोगनी : चार सात, बीस भइल मलकाइन। ऊपर से हंसुली।

खदेरन की माँ : तेहूँ त तीन बीस दे चुकलिस सिताबी के।

भगजोगनी : जिनगी भर के जमा जथा ओतने रहबे कइल। ऊपर से पहुँचियो गइल।
फाठक बाबा चलिये।

(लोहासिंह पाठक जी के साथ लेफ्ट राइट करता आ रहा है)

खदेरन की माँ : काबुल के मोरचा वालू फाटक बाबा के संगे आबत बाड़न। तैं कुछ कहिईं मत।

भगजोगनी : हमरा देने से निसा खातिर रहीं मलकाइन। हमरा त सांच पूछीं त रउए से डर लागता।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे। ना चुप रहबिस। बड़ा भारी पुरी बने चलल बाड़ी। तोरे कहला में पर के त रोपेया देलीं।

भगजोगनी : अब देख मलकाइन के अछरंग लगावल। बुलाकी सिंघ के रोपेया पहिले रउआ देलीं कि हम ?

खदेरन की माँ : चुप ना रह। आ मार बढ़नी रे, आइलन।

(लोहासिंह और पाठकजी का प्रवेश)

लोहासिंह : फाटक बाबा, इहे है। दुनो असामी की चीन्ह लीजिये।

पाठक : हम जेबा से चीन्हते नइखीं ! इहे लोग के चीन्हे में त हमारा जिनगी गुदमत हो गइल। जजमानिन त नारी हइए हई भागोजोगन जजमानिन में नारी के सब गुन एक दिसाहें से लउकता।

लोहासिंह : बाकि ई दुनो मेम नहीं मेमिन है। मेमिन उसको कहल जाता जे फुटानी के झोला में से ऐना निकाल के अपाना सेनबोट तिकउती रहती है।

पाठक : जेबा से काग भुसुन्डी पुरान में एही बात पर कहल बा दया धरम ना तन में मुखड़ा का देखे दरपन में ?

खदेरन की माँ : जजमान आ उपरोहित अवते लगलन बेंग बचन बोले। हम कवन निरदई के काम कइलीं कि अइसे कहत बानी जा ?

लोहासिंह : ऊ त हमहीं है कि बरदास कर घालते हैं। दोसर केहू रहित त उसको करेजा ललटेम का सीसा माफिक चनक जाता।

पाठक : जजमान तू लिलकंठ हव लिलकंठ। जेबा से जहरो पी के सानत रहल।

भगजोगनी : मलाकाई सुनत ना बानी फाटक जी के मुंह चुनियां चुनियां के दही में सही लगावल।

पाठक : ना चुप रहबू। जजमान के बहुत समुझा बुझा के काबू में रखले बानी। भड़क जइहें त अगिया बैताल हो जइहें।

खदेरन की माँ : ई अगिया बैताल हो जइहें त हमहूं असमान में के बिजुरी हो जाइब। हमका कौनो इनका से कम खिसिआह बानी ?

लोहासिंह : फुलिस्टौप खदेरन की माई, अपाना नरेटी को अटन सन मारो ।

खदेरन की माँ : वाह रे चुपके करवीहार । इनकर एतना चलती चलल बा कि हमरा के बोले ना दिहे ।

भगजोगनी : जइसे दवंरी में बैल के जाब लगावल जाला होइसहीं मलिकारो हमनी के जाब लगावे के चाहत बाड़न ।

लोहासिंह : चोप, जब्बर चोर सेन्ह में गावे का खीसा करती है ? फाटक बाबा दुनो को अरेस्टल करके गिलिफदार कीजिये ।

पाठक : जजमानिन तूं आ भागजोगन भगतिन बहुत गलती कइले बाडू जा ।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे. इनकार छुहिंतर हम का चीन्हत नइखीं ? हम इनकर नस नस चीन्हीं ला । परसों मांगत रहन पचास गो रोपेया कि मकान में चूना फेरवाइब, नया फसन से लछमी जी के पूजा करवाइब ।

भगजोगनी : खाली अतने रहित त मलकाइन देइओ देतीं । दस गो रोपेया मलिकार खो भारी के दान देबे के मांगत रहन ।

खदेरन की माँ : कमाई ना धमाई आ फुटानी अतना । आ मार बढ़नी रे । बड़ा दानी करन बाड़न ।

लोहासिंह : का चाहती है ? हमहूँ चोरी करें । डकैती करें, घूस लें, जुआ खेलें ?

पाठक : कमीनी करे खातिर बुलाकी सिंघ गइले न बाड़न ?

लोहासिंह : न मन काम खातिर पइसा मांगा त कह दिया कि पइसे नहीं है आ जुआ खेलने खातिर बुलाकी के डबल से रोपेया दिया आउर गहनो दिया। बोलो दिया कि नहीं दिया ? आ दिया त काहे देलू ?

पाठक : बोल जजमानिन, चुप काहे बाड़ू।

लोहासिंह : बोलो, जवाब दो, काठ काहे मार दिया ?

भगजोगनी : देवाली के मौका पर सगुन बनावे खातिर बुलाकी मालिक आ सिगबी रोपेया मंगलन ते दे दिआइल।

खदेरन की माँ : उहो उधारे लेखा दिआइल बा। सूद समेत लोग लवटा दी।

लोहासिंह : तुम हमारा नाक कटवा के बाग घाला। एकदने हम अपाना पांवर भर कोरसिस करता है कि अमरजंसी का टैन में कहू अपाना रोपेया जुआ में बरबाद नहीं कर, जेतना पइसा है उसका देस के भलाई खातिर इस्तेमाल होखे आ तुम ह कि घर का आटा गील करता हुई बदरसन करता ह आ उस बुलाकियो के लेन से बेलेन चलाता है।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, बात बूझस हइए ना लागलन कपार खाए। ई कहीं कि रउआ जुआ खेलहीं ना आवे। आज काल्ह जुआ के ना खेले जा ? लूर हइए नइखे त उहे हाल बा कि खिसिआइल बिलाई खम्हा नोचे।

भगजोगनी : बुलाकी मालिक आ सिताबा कवनो जूआ खेले गइल बाड़न ? ऊ लोग त लछमीजी के सगुन बनावे गइल बा। जेतना लोग लगाई ओकर

चरोबरी बटोर के ले आई।

लोहासिंह : तुम लोग के अक्किल खस्तान हो गई है। तुम्हारा पहुँचियो चार गो हो जाई आ तुम्हारा हँसुलियो चार गो हो जाई।

खदेरन की माँ : होइए जाई। आवे दों बुलाकी भइया के।

भगजोगनी : अब रोपेया के मोटरी ले के बुलाकी मालिक आ सिताबी आवते होइहैं।

पाठक : ऊ लोग रस्सी में बन्हा के आइल बा। बाहर खम्हा में बान्हिल बा लोग।

खदेरन की माँ : आयं ? ई का सुनत बानो दादा।

भगजोगनी : हे भगवान अब हम कहाँ जाईं।

लोहासिंह : ऊ त कहो ग्राम सेवक दल के साथ हम चहुँप गया नाहीं त चला जाता सम जेइल में चकरी पीसने। फाटक बाबा पकड़ के ले आइये दुनो के।

पाठक : तुरन्त जजमान।

(पाठक जी जाते हैं)

लोहासिंह : जुआ खेलवा के सगुन न बनाने चला थी। चोर सगुन बनाता है त तुम सब चौरिओ कराओ। दुनो तुम लोग का सब रोपेया हार गया।

खदेरन की माँ : आहि ए कमइया। हम धान कूट कूट के रोपेया जमा कइले रहीं। हमार सब रोपेया आ दस भर के चानी के हँसुली।

भगजोगनी : अब हम जान दे देब, हम उजड़ गइलों, कतहूँ के ना रहलीं।

(दोनों रोती हैं।)

लोहासिंह : अब का पाँच पाँच करती है सब ? पहिले नहीं अकिल था । देखो आ गया सब । ले आइये पाठक बाबा ।

पाठक : ल जजमान ई लोग के छोड़व धुरछुक ।

खदेरन की माँ : बुलाकी, जुआड़ी तू नाहीं । हमार रोंपेया आ हंसुली निकाल ना त हम मार बढ़नी मार बढ़नी गत्तर गत्तर फोर घालब ।

भगजोगनी : सिताबी, हमार रोपेया आ पहुँची द ना त मार हांडी के कपारे फोर घालब ।

खदेरन की माँ : बोलत काहे नइखस रे पापी जुआड़ी ? फुसिला के रोपेया मांगत नीक लागत रहे ।

भगजोगनी : धोखेबाज, हमार पहुंची द ना त हम आज जीअत ना छोड़ब ।

लोहासिंह : रोपेये आउर गहना काहे, अपना कोठिला खोल के देखो तनिको धान चाउर बचा है । सब ई दुनो बेच के जुआ खेल गया ।

पाठक : जुआ से कबो केहू के भगलाई भइल जेबा से । जुजुस्ठिर खेलन त राज के साथ दरोपेदी हार गइलन, नल खेललन त बारह बरिस जंगल भटकलन ।

बुलाकी : पाहुन, तूं त जनबे करल हम सौझिया इमदो । सिताबिये हमरा के कहलन त हम जुआ खेले गइलीं ।

सिताबी : झूठ नत बोल बुलाकी सिंघ ।

खदेरन की माँ : हम आज दुनो जाना के दुरगत कर घालब। भग-जोगनी ले आव त बढ़नी।

भगजोगनी : लीहीं मलकाइन।

लोहासिंह : हालट। तुम लोग का गहना आउर रोपेया हम लवटा देता है। जुआ के सब रोपेया हमारा कबजा में है बाकि तुम लोग किरिया खाओ कि न जुआ खेलेगा न किसी के खेलने देगा।

बुलाकी : हम जनेव छू के किरिया खात बानी पाहुन।

सिताबी : हमहू धरम से कहलत बानी

बुलाकी : त बिगुल बजाईं पाहुन ?

लोहासिंह : बजाओ। हमको गांव भर के आगा जुआ खेलने का बरखिलाफ फुलिस्टौप वाला भाखन देना है।

(बिगुल)

लोहासिंह : चाबस। जुआ नहीं खेल के ठीक से देवाली मनाने वाली बटेलियन, रेडी अटेनशन फारवर्ड मार्च, लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट।

●

Loha Singh ka naya morcha

हिन्दी साहित्य के अनमोल ग्रन्थ

उपन्यास		
नया युग नया मानव	श्री मोहनलाल महतो वियोगी	५ · ००
नाभाग	श्री उमाशंकर बहादुर	१ · २५
मृत्युलोक	श्री अनन्त मिश्र प्रबुद्ध	१ · २५
गल्प एवं कहानियाँ		
चिता के फूल	श्री रामवृक्ष बेनीपुरी	३ · ००
नाटक		
लोहासिंह [आँवले का मुरब्बा]	श्री रामेश्वर सिंह काश्यप	३ · ००
लोहासिंह का नया मोर्चा	,, ,,	३ · ००
सिराजुद्दौला [पुरस्कृत]	श्री सर्वानंद वर्मा	२ · ००
निबंध एवं संस्मरण		
पहिये की धुरी	श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'	२ · ७५
साहित्यिकों के संस्मरण	श्री ज्योतिलाल भार्गव	४ · ००
पुरुषार्थ के बोलते चित्र	श्री हिमांशु श्रीवास्तव	३ · २५
निबंध संचय	श्री सूरज प्रसाद सिंह	३ · ०८
काव्य		
बैठो मेरे पास [पुरस्कृत]	श्री केदार मिश्र 'प्रभात'	३ · ००
मेघदूत	श्री नागार्जुन	३ · ००

हिन्दी संसार की समस्त पुस्तकें प्राप्त करने का

एकमात्र स्थान :—

राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल

राष्ट्रीय

प्रकाशन